श्रीः

शिवदत्तकृतं

पारिजात-नाटकम्

(सूत्रधार कथित-मङ्गलगीतम् –)

देखि शुम्भ-निशुम्भ अतिबल,
देव मुनिगण चरण सेवल,
भेलि परसनि[1] सेवक-दाहिनि, सिंहवाहिनि हे ।।
आए आदिकुमारि माता,
सबहि कारज सिद्धिदाता,
बिन्ध्य जाए निवास-कारिणि, [2]अरिसंहारिणि हे ।।
असुर[3] सुग्रिव देखि रूपा,
कहहि शुम्भ-निशुम्भ भूपा,
कोटि[4] शशि-सुरसम सुरूपा, अतिअनूपा हे ।।
धूम्रलोचन वीर जानी
जाए कहिय [इ] मधुर बानी,
करब घर सरदार रानी, जाए आनी हे ।।
दूत[5] शुम्भ-निशुम्भ-प्रेषित,
कहए लागल वचन अतिहित,
होअह जाय त्रिपुररानी, चलि भवानी हे ।।
धूम्रलोचन कोप कए मन,
बाहु पकड़ए चलित तहि[6] छन,
[तेहि] हुँकार सुनए दीन्हो, भस्म कीन्हो हे ।।

१—प्रसन्ना । २—शत्रु कें मारनिहारि । ३—सुग्रीव नामक असुर अहाँक रूप देखि राजा शुम्भकें कहलक । ४—करोड़ो चन्द्र ओ सूर्यक समान । ५—शुम्भ-निशुम्भ-द्वारा पठाओल दूत । ६—'हित धव'—मूलपाठ ।

कालिके विस्तारवदना,
अति भयानक विकट-दशना[7],
सोभए चञ्चल परम [8]रसना, [9]सर्प-समना हे ॥
लम्बितोदर मुण्डमालिनि,
चण्ड-मुण्ड विध्वंसकारिणि,
कालिके कर खड्गधारिणि, वैरिमारिणि हे ॥
रक्तबीज विशाल अतिबर,
आए घेरल अम्बिके दल,
बिहुँसि दुर्गे ! हँसहि पल-पल, देखि [10]अरिदल हे ॥
विविध शक्ति स्वरूप धारिणि
रक्तबीज शरीर दारिणि[11],
सकल सुरकुल कुशल कारिणि, [12]दुरित-दारिणि हे ॥
[13]समर शुम्भ-निशुम्भ खण्डिनि,
सकल गति गिरिराज-नन्दिनि,
असुर मारिणि देववन्दिनि, अरिनिकन्दिनि हे ॥
कृपा करिअ महेश-रानी,
जान नहि तुअ गति बखानी,
शिवदत्त इहो उचर बानी जय जय भवानी हे ॥१॥

(ततो नटी प्रवेशिका-गीतं गायति—)

[14]पूरन-शशि सम कला पसारि । कएल गमन गजगामिनि नारि ॥
हेरइतें बदन परम अभिराम[15] । मुनिहुँक मन धुनि बाढ़ल काम ॥
[16]रङ्गभूमि निअ मन अवधारि । सीसल रूपें निशाकर[17] हारि ॥

७—विकराल दाँतवाली । ८—जीह । 'राना'—मूलपाठ । ९—सभक शमन करयनिहारि । 'सैष समाना'—मूलपाठ । १०—शत्रुगण । ११—चिरनिहारि । १२—पापनाशिका । १३—युद्ध मे । १४—पूर्णचन्द्रक समान । १५—सुन्दर । १६—रङ्गमंच १७—चन्द्रमा।

देखइतें जगत रहल नहि थीर । सभ मन बाढ़ल [18]मनमथ-पीर ॥
मन अवधारि रसिक रस जान । मन गुनि शिवदत्त एहो पद भान ॥२॥

(अथ नटीं प्रति सूत्रधार कथित श्लोकः—)

[19]सभानुरञ्जनार्थाय कृत्यं नित्येन एव च ।
परिपूर्णाय तस्यैव साहित्यं कुरुष मम ॥१॥

(ततो[20] नटी कृतकृत्यं करवाणीति' कथयति। ततः सखीं प्रति नटी गीतेन कथयति—)

परम सुदिन दिन मोर सखि ! भेला । हरषि हसित पहु दरसन देला ॥
बिहुँसि-बिहुँसि मोर कहलन्हि बानी । नृत्य करिअ परिपूरित आनी ॥
सभए सखी मिलि-जुलि चलि आउ । पहु मन घन अति मोद बढ़ाउ ॥
सुनि सुनि सकल सखी मन मान । मन गुनि शिवदत्त एहो पद भान ॥३॥

(अथ कृष्णादि-प्रवेश-सूचना-गीतम्--)

माधव मनसिज[21] गरुड़ सवारे । देव [22]पुरन्दर सहित कुमारे ॥
रुकुमिनि सखी-सहित चलि आबे । सतभामा देवि मान जनावे ॥
उद्धव नारद-मुनि परवेसा । ऐरावत अतिसुन्दर गजेसा ॥
शिवदत्त हरि हरथु कलेसा । एहि नाटक एतबा परवेसा ॥४॥

(अथ स्वतः श्रीकृष्ण-प्रवेशिका-गीतम्--)

माथे मुकुट, तिलक वनमाले । पीत-वसन तन मदनगोपाले ॥
कुञ्जभवन माधव परवेसा । मूरति श्याम मनोहर भेसा ॥
परम सोहाओन नव-नव फूल । उद्धव संग हरि बूलल बूल ॥
मन-मन गुनि शिवदत्त पद भान । रसिक गोपाल सभे रस जान ॥५॥

१८—कामवेदना । १९—सभाक मनोरञ्जनक हेतु ओ दैनिक कृत्य भेलाक कारणें तकरे (नाट्य-कलाक) पूर्णताक हेतु अहाँ हमर सहयोग करैत छी ॥१॥ २०—तखन नटी कृतकृत्य (धन्य) होइत 'करैत छी'-ई कहैत छथि । तखन नटी गीत द्वारा कहैत छथि । २१—कामदेव । २२—इन्द्र ।

(अथ रुक्मिणी-प्रवेशिका-गीतं गायति--)

सुन्दर परम मगन छल वेस । एहि अवसर रुकुमिनि परवेस ।।
गजगामिनि कामिनि कत साथ । मिलि जुलि चललि कान्ह दए हाथ ।।
चलइते पगु नेपुर घहराए । रुनुझुनु बिछिया सबद सुनाए ।।
कटि किङ्किणि नेपुर भल बाज । गाव मधुर धुनि मङ्गल आज ।।
आइलि सखिगन बहुत समाज । देखल कमल-नयन ब्रजराज ।।
शीवदत्त भन सुमरि भवानि । शरण देहु शरणागत जानि ।।६।।

(अथ सखीं प्रति रुक्मिणी-कथित-गीतम्--)

आएल देखल हम ओ ओ रे, [चल] गेल,
प्रेमक नेम[23] बेकत भेल ।।
देखि हरष हिअ ओ ओ रे, बेधल
नेहक[24] लता असेधल ।।
एहि विधि बान्हल ओ ओ रे, मोर मन,
डोलि सकत नहि बहुखन ।।
शिवदत्त कवि ओ ओ रे, पद भन,
[25]तोरित पुरहु हरि मोर मन ।।७।।

(अथ रासगीतं गायति -)

फुलल सेउँति[26] चमेलि माधवि, बेलि कुन्द नेवारि ओ ।
खेलति रुकुमिनि कृष्णके संग, गेन गेनहि मारि ओ ।।
शङ्ख बाज मृदङ्ग सुन्दर, बाँसुरी करताल ओ ।
कएल हरखित सकल सखिगन, नाचि नाचि गोपाल ओ ।।
केलि सभ मन मगन भए गेलि, करए हरष हुलास ओ ।
... ... ।।
नारि लए लए कोर भए गेल कृष्ण पूरन-चन्द ओ ।
शिवदत्त भन चरन मन दए, मेटहु दारुन दन्द[27] ओ ।।८।।

२३ अङ्कुर व्यक्त भेल । २४ -- स्नेहक लत्ती मे कसिकय बान्हल । २५ -- शीघ्र ।

(अथ शङ्का-गीतम्--)

कुञ्जभवन कर रास मुरारि । हरखलि सकल जतेक छलि नारि ।।
एक बेरि सभ मिलि ऊपर निहार । अचरज देखि देखि मनहि विचार ।।
कीदहुँ पावक[28] गगन विराज । कीदहुँ उगल दोसर रवि[29] आज ।।
तखन बुझाए कहल भगवान । नारद पै थिक एहु परमान ।।
ब्रह्मतेज दुति[30] जितए हुतासे[31] । रविसम दोसर देखिअ अकासे ।।
से सुनि सखी सकल मन मान । मन गुनि शिवदत्त एहो पद भान ।।९।।

(अथ नारद-प्रवेशिका-गीतम्--)

इन्द्रभवन सओ मुनि चल अएलाह, एहि जग लेल परवेस ।
धोती धवल तिलक शिर राजित, [सा] सम शोभित केश ।।
अनुपम सुरभि[32] सबहि मन भावए, लागि रहल हरि आस ।
हमर सन्देस गुपुति[33] कए राखल, पसरल सगर सुवास[34] ।।
कतेक जतन - मोहि[35] सुरति देलन्हि, थिक अनुपम बहुमूल ।
नारद हँसि हँसि हरि-कर देलन्हि, पारिजात एक फूल ।।
फूल पाबि हरि हृदय लगाओल, मुनि कहि पुछल विचार ।।
कओनहि कर एह फूल हम देअओ, सोरह सहस्र हजार ।।
हरिक वचन सुनि, कहल नारद मुनि, मन दए सुनु मोर बात ।
दुर सोहागिन[36], लग छथि रुकुमिनि, देअनु तनिकहि हाथ ।।
मुनिक वचन सुनि, देल हरि रुकुमिनि, सोचए लागलि छनि मान ।
[37]हेमगिरि-कुमरि चरण शरण धरि, शीवदत्त कवि भान ।।१०।।

(अथ रुक्मिणीहर्षगीतम्--)

जप तप पुरुब जनम हम कएलहुँ, जतेक पुजल हम गौरी ।
पारिजात हरि हँसि कर देलन्हि, सभ परिपूरलि गोरी ।।

२६--(?) । २७--कठोर द्वन्द्व (संघर्ष) । २८ - अग्नि । २९ - सूर्य । ३० - द्युति (कान्ति) । ३१ - अग्नि । ३२ - सुगन्धि । ३३ - गुप्त कए । ३४ - सुगन्धि । ३५ - हमरा (नारदकेँ) स्मरण करओलनि । ३६ - सौभाग्यवती सत्यभामा दूरमे छथि । ३७ - पार्वतीक ।

हिय मोर हरखेँ जुड़ाएल हे सखि ! हरि फुल देल मोर हाथ ।
आनल मान बहुत कए अपनो, सोहए सहस गोपि साथ ॥
सभ [38]परिहरि हरि फुल मोहि देलन्हि, ऊपर रहल मोर माथ ।
जीवन जनम मोर भेल सोभारथ कृपा कएल यदुनाथ ॥
आनन्द उर न समाइछ हे सखि ! जानि अपन बहुमान ।
हरि-पदकमल हृदय धरि राखल, शीवदत्त कवि भान ॥११॥

(नारद-प्रस्थान-गीतम् –)

ई देखि तोरित [39]चलला मुनिराजे । [40]वासव-गरब निवारण काजे ॥
हरिक सोहागिनि जनए निवासे । गेला जाय सलन तसु पासे ॥
हरषित भेलि मुनि दरसन पाए । कएल प्रणाम चरण चित लाए ॥
आसन दए लेल चरण पखारि । पिअयक देलनि शीतल [41]वारि ॥
मुनि हरषित अति आदर जानि । शीवदत्त भन मन अनुमानि ॥१२॥

(अथ नारदं प्रति सत्यभामा-कथित-गीतम्--)

मुनिक समादर कए जत जानि । लागलि कहए वचन अनुमानि ॥
लागल आस हमर मन माहि । हरिक कुशल किछु पाविअ नाहि ॥
तीन भुवन हित जानिअ तोहि । माधव खबरि सुनाविअ मोहि ॥
नारद कहए लाग किछु वानि । शीवदत्त भन मन अनुमानि ॥१३॥

(अथ सत्यभामां प्रति नारद-कथितगीतम्-)

एखन छलहुँ हरिक हम साथे । रुकुमिनि सहित चलल व्रजनाथे ॥
गेल छलहुँ हम सुरपति-पासे[42]। पाओल फुल एक परम सुवासे[43]॥
पारिजात थिक नामक फूले । एक संसार अनूप अमूले ॥
कल्पवृक्ष भए होल अवतारे । [44]वासव कें थिक अधिक पिआरे ॥

३८ - सभ कें छोड़ि । ३९ - शीघ्र । ४० - इन्द्रक गर्वकें हटयबाक हेतु ।
४१ - जल । ४२ - इन्द्रक लग । ४३ - सुगन्धित । ४४ - इन्द्रकें ।

आनि तेहन फुल हरिकें देल । देखयित हरि अति हरषित भेल ॥
बिहुँसि बिहुँसि फुल रुकुमिनि देल । एको बेरि अहाँक नाम नहि लेल ॥
दिन-दिन छोटि परब एहि रीति । कोन परि बुझब हरिक पिरीति ॥
आओत आनि जखन बड़ गोट । गाड़ल नहि होअ सगर छोट ॥
मान करब मन अथम अपार । जा धरि गाछ लागए नहि द्वार ॥
ई कहि नारद कएल पयान । मन गुनि शीवदत्त पद भान ॥१४॥

(अथ सत्यभामा प्रवेशिका-गीतम्-)

सुनि मुनि-वचन परम मन मान । बिसरल सकल हरष ओहिठाम ॥
अधर न हास बोलथि किछु नाहि । विरह-पराभव अति मन माहि ॥
फूजल चिकुर [45]मलिन तन भेस । सतभामा देइ देल परवेस ॥
निज अपमान परम मन मानि । शीवदत्त भन मन अनुमानि ॥१५॥

(अथ सखीं प्रति सत्यभामा-विलापगीतम्-)

मुनिक वचन सुनि मन आकुल, दुर गेल गौरव आज ।
एत अपमान सहय नहि पाविअ सुमरि सुमरि हरिकाज ॥
आब उचित कोन जीवन हे सखि ! रहल हमर नहि मान ।
मोर मन दृढ़ भेल पुरुष अपन नहि, से जग के नहि जान ॥
भूषण वसन उतारि नहाओल, जानि अपन अपमान ।
गुन गौरव सभ भेल अकारथ[46], अब हम तेजब परान ॥
सुनह वचन सखि ! अविरुधि [यदि] हरि, रुकुमिनि-पति ब्रजराज ।
टूटल सिनेह नेह जत लाओल, दुर गेल दुरमति आज ॥
[47]कलह विसारद नारद हे सखि ! अपनहि बुझ परमान ।
हेमगिरि-कुमरि चरण शरण धरि, शीवदत्त पद भान ॥१६॥

[अथ सत्यभामा-समीपे श्रीकृष्णागमन-गीतम्-]

नारद कलह-विसारद थिक ई, सेहो मन नहि अवधारी ।
ति तोरित हरि आए तुलाएल, करइत धनिक पुकारी ॥

४५ - केश । ४६ - व्यर्थ । ४७ - झगड़ा लगयबा मे निपुण ।

कहहु वचन सखि ! कतए आएल छथि, धिक धिक रुकुमिनि-नाथ[४८] ।
परम कलेश भेल धनि अएलन्हि वान्हि वसन[४९] निज माथ ॥
आकुलि विरह वेआकुलि भेली, सखिगन[५०] बात जनाव ।
बीच बानि जनि तोर लगाओत हरिक वचन सुनि पाव ॥
हरिक वचन सुनि भेलिहु बेसुधि धनि, बैसि रहल मुख फेरि ।
ई याचक दाता मुख हेरहु हरखि हरखि एक बेरि ॥
गिरि तह[५१] गरुअ मान कर भाविनि, बस एक हरि रस जान ।
हरिपद कमल हृदय धरि राखिअ, शीवदत्त पद भान ॥१८॥

[अथ मानिनीं प्रति हरि-कथित-दोहा]

जओँ किछु भेल अपराध धनि, मानिनि छेमहु मोर ।
एतेक उचित नहि मान तोहि, गिरि तह अधिक कठोर ॥१॥

[अथ मानिनी-कथित-दोहा-]

एहि सम[५२] कहने शकक नहि, हृदय जरल अछि मोर ।
पहिने हृदय सताय कहुँ, आब करै छथि सोर ॥२॥

[अथ दूतीं प्रति हरि-कथित-दोहा-]

धनि मानिनि अति जानि कहुँ, हरि लेल दूति बजाए ।
मन महँ प्रेम बढ़ाए कहुँ दूती ! देहु मनाए ॥३॥

[अथ मानिनीं प्रति दूती-कथित-दोहा-]

तोहि मनाओन हे सखि ! आए मदन - गोपाल ।
वेधे सर तन [५३]मदन के, भले खड़े हुएँ लाल ॥४॥

४८—ओ रुक्मिणीक पति थिकाह, हमर नहि । ४९—वस्त्र सँ । 'बान्हि दनि' मूलपाठ । ५० = 'सखि गिल बात जेनाव' = मूलपाठ । ५१ = पहाड़ सन भारी । ५२ = 'सब बुक हम शबक' = मूलपाठ । ५३ = कामदेवक ।

तुअ देखन के लालसा, व्याकुल फिरत गोपाल ।
कनक[५४] रङ्ग को जानि के करै अधर धरि लाल ॥५॥
मोहे मन सब सखिन के, फिरत फिरै बन माँह ।
सो हरि आज तुअ मिलन को, आए सखिन के बाह ॥६॥
पूर्ण शशी[५५] पर अपर शशि, उगे दुहू एक ठाम ।
[५६]मध शशि फूले कमल-युग, देखहु कमल से श्याम ॥७॥

(अथ मानिनी-कथित-दोहा--)

हमर मिलन चाहत नहि, निशि-बासर नहि चैन ।
[५७]श्याम रङ्ग को जानि कै, श्याम करै निज नैन ॥८॥
वचन मधुर अति श्यामके [५८]अन्तर कपट निदान ।
प्रीतिकरी जग जानि कहुँ, जे सभ दिन सविमान[५९] ॥९॥
हरिक सोहागिनि जगत भरि, नाम हमर भेल सोर ।
हँसत सखीगन जानि कहुँ एहन करम मोर भोर[६०] ॥१०॥

(अथ मानिनी-कथितं दूतीं प्रति विलाप-गीतम्)

गुण-गौरव सखि ! मोर दुरि गेल । हरि हँसि फूल रुकुमिनि कें देल ॥
हे सखि ! रहल हमर नहि मान । नेह करइत हो परम गलान[६१] ॥
पुरुब नेह अत कहइत लाजे । आब सखी ! हम अएलहुँ बाजे ॥
मन गुनि शीवदत्त पद भान । रसिक गोपाल सभए रस जान ॥१८॥

(अथ मानिनीं प्रति दूती-कथित-गीतम्)

मान कला धरि बैसलि सुन्दरि, मोह-मगन भेल मदन-मुरारी ।
सनहि रिझावथि वेनु बजावथि, विकल भेल गिरिधारी ॥

५४ = सोनाक रंग कें सरथाक वर्ण बूझि । ५५ = पूर्णचन्द्रमा पर दोसर चन्द्र (कृष्ण)। ५६ = दुनू चन्द्रक बीच मे कमल (स्तन) । ५७ = कृष्णक वर्ण कें श्याम जानि । ५८ = भीतर । ५९ = अपमान करैत । ६० = मन्द । ६१ = दुःख ।

चरण कमल सन, अति छबि भूषण, मुखरूप चाम समान ।
नयन सरोज[६२], अधर फुल मधुरी, भ्रूकुटी कुटिल कमान ॥
[६३]मदन बेयल तन, किछु न भावय मन, फिरत फिरए व्रजराज ।
विधिवस, दिन दस यौवन धन सखि ! न कर विमुख मन आज ॥
तुअ बिनु हरि निशि बैसि गमाओल, बहुल बेआकुल काम ।
हृदय कठोर ओर धए राखिए, कओन उचित परिनाम ॥
चानक जोति जगत सभ जानत जे निरमल छथि तोर ।
हृदय कठोर दोष तुहु सुन्दरि, जे नहि तोहर इजोर ॥
काज न आओत गौरव हेसखि ! आब उचित नहि मान ।
हरिपद कमल हृदय धय राखल, शिवदत्त पद एही भान ॥१६॥

(अथ मानिनीं प्रति दूती-कथित-कवित्तमाह –)

जाए कही दुति[६४] मानिनि सौं, अलि ! आए खड़े हैं कुमर कन्हाई ।
मन ही कछु सोचत हैं मनमोहन, मैं अब तोहि मनाओन आई ॥
आप न आए सके हरि जू इस कारण दूती मोहि पठाई ।
जाए मिलो हरि सौं अब ही, रहए सगरे तुम्हरी चतुराई ॥१॥

(अथ मानिनी-कथित-कवित्तम्-)

रुकुमिनि कैं न मनावत हैं सखि ! प्रीति नई उनकी तनकी है ।
तुं क्यों बात बनावत है, उन सौं हमको पगरीट करी है ॥
बिस मारि बुझा[वत है] हमको, जिहि कारण ते सुख की चटकी है ।
कहए कछु अओ कछु अओरन की,[सखि !]कौन कहै उनकी मनकी है ॥२॥

[अथ मानिनीं प्रति दूती-कथित-कवित्तम्]

क्यों तोहि आनि पड़े मन में, सखि ! बैठि रही अपनी गृह जाई ।
— — — — — — .... — .... — — — — — .... — ....॥

उनकी कछु बात सोहात नही, मोहि तूं क्यों बात बनाओन आई ।
कह कैं तुम आगि लगावत पानि में, एही बनी तेहरी चतुराई ॥३॥

[श्रीकृष्णं प्रति दूती-कथित-कवित्तम्-]

मालति नाहि मनावत हैं कत, की जग मे रिति नई भई हैं ॥
उनतें कछु उत्तर देत नहीं, हम ही जग मे बदनेस[६५] भई हैं ॥
हरि ! बात जनावत आपे न क्यों, अब जाइ मनाइ [उपाय करी] हैं ।
दूती के बात सुने मनमोहन, आपहि उठे यदुराइ [हरी] हैं ॥४॥

(अथ मानिनीं प्रति हरि-कथित-कवित्तम्—)

काहे को मान बनावति सुन्दरि ! क्या तोहरे मन कपट भरी है ।
दोषन कौन से मोर पड़ी, अलि ! सो नहि सो ही जानि परी है ॥
क्या तोहि रोस भई मन सुन्दरि ! नैन तिहारो जोग नई है ।
योगिनि नारि निहारि तहीं, हमरे दिल सैं कुछ सोच भई है ॥५॥

(अथ मानिनी-कथित-कवित्तम्—)

काहे को बात सुनावत हौं अलि ! मैं अपने [हिय] दुःख भरी है ।
बात तिहारो सोहात नहीं मोहि मेरे दिल बिच रोस भरी है ॥
काहे को सोचत हौं मनमोहन, जाहु तहाँ जहाँ प्रीति नई है ।
जाहुजि जाहुजि जाहु चला, अब छोट जो लालन छोर भई है ॥६॥

(अथ श्रीकृष्ण-कथित कवित्तम्—)

काहे को चीर उपेखि नहावति, काहे को भूषण भार भई है ।
आनन क्यों तुम फेरि रही, इस कारण दिल बिच सोच भई है ॥
बात कछू न सुने हरिके, इह मानिनि केवल मानमई है ।
बोलहु बोल कहे निसि-बासर, प्यारी से ना गमरी तो भई है ॥७॥

(अथ मानगीतम्—)

हरि बेमुखि देखि कलावति रे, सम्मुखि नहि होइ ।
भूषण बसन उतारल रे, फेकल सभ कोइ ॥

कोटि कला हरि लावथि रे, नहि बोलए बानी ।
गिरिवत मान धएल धनि रे नहि हेरए सयानी ॥
देखल वदन मलिन कए रे, मनें ज्ञान हरि लेत ।
छन - छन मन आकुल हो रे, सएन चएन नहि देत ॥
परसन धनि कए अपन मन रे, परितेजिअ माने ।
हरिपद कमल हृदय धरि रे, कवि शिवदत्त भाने ॥२०॥

(अथ मानिनी·कथित·गीतम्—)

जत जत हुनि हरि भाषल रे, राखल एकओ नहि थीर ।
जों मोहि बुझि[66]अयथारथ रे, [67]सारथ नहि हरि-गीर ॥
मन दए हमर बचर सखि रे, हरि [कों] कहिअ बुझाय ।
पारिजात तरु आनथि रे, देथु मोहि द्वार लगाय ॥
सब परिहरि जों हरि मोर रे, बचन सुनथि जों कान ।
मन महँ कएल कठिन प्रण[68] रे, से जों राखथि मान ॥
से परिपूरथि मोर हरि रे, परितेजिअ [हमें] मान ।
... ...॥
शीवदत्त भन मन दए रे, छोड़िअ कपट पट आज ।
[69]बाँकहि नयन निहारलि रे, मन चएन कएल ब्रजराज ॥२१॥

(अथ मानिनीं प्रति श्रीकृष्णकथितगीतम्—)

एक फुल लए धनि रूसलि रे, मन कएल पषान[70] ।
[71]जामिनि आए निराइलि रे अब होएत विहान[72] ॥
भूषण वसन समारिअ रे, देखि नयन जुड़ाए ।
आनब गाछ फूलक हम रे, देब द्वार लगाए ॥
परसनि कएल वदन धनि रे, हेरु नयन उधेरि ।
वदन वसनें [73]अछिनत कए रे, बोललि मुख मोरि ॥

66 - अयथार्थ (फूसि) । 67 - सार्थ । हरिक बचन अर्थयुक्त नहि । 68 - कठिन प्रतिज्ञा । 69 - कटाक्ष । 70 - पाथर । 71—राति आब समाप्त भेलि । 72 - प्रात । 73 - वस्त्र युक्त मुँह केँ झुकाए ।

चएन बएन सुनि मन भेल रे मन पूरव तोरि ।
... — — ... ... — — .... ॥
लुबुधल रसें रसिक-जन रे रसमय रस जाने ।
हरि पद कमल हृदय धरि रे शिवदत्त पद भाने ॥२२॥

(अथ श्रीकृष्णकथितं नारदं प्रति गीतम्)

अनुमति कए दृढ़[74] दिन मन रे लेल मुनिहि बजाए ।
इन्द्रक भवन सिधारिअ रे सभ कहिअ बनाए ॥
पारिजात तोरित आनिअ रे मोहि दए हलु लाए ।
जाहि कारण धनि रूसलि रे देब द्वार लगाए ॥
इन्द्रक सभा बुलाएल रे मुनि नारद आजे ।
शीवदत्त भन मन दए रे देखल सुरराजे[75] ॥२३॥

(अथ [76]सखीं प्रति सत्यभामा·कथित·गीतम्—)

जनम [77]सोगारथ ओ ओ रे, भेल मोरि,
राखल गौरव मोर हरि ॥
के अछि एहनि ओ ओ रे, कहब काहि
एहन हरष भेल रह जाहि ॥
सुरपुर [78]सौं द्रुम ओ ओ रे लाओल
से मोर द्वार लगाओल ॥
श्यामसुन्दर मन ओ ओ रे भाओल
लोचन-युगल जुड़ाओल ॥
चान समान एहो रे हरिमुख
देखइते उपजल मन सुख ॥

74 - स्थिर दिन । 75 - इन्द्र । 76— प्रसङ्गानुसार एहि सँ पूर्व इन्द्रक उक्ति नारदक प्रस्थान कृष्णक संग्रामार्थ प्रस्थान आदिक उपन्यास उचित । प्रायः लेखक प्रमादात् तीन चारि गीत छुटि गेल । गीत सं०—24 तथा 25 अग्रिम तीन गीतक बाद रहय से उचित । 77— जन्म लेबाक सुख । 78—स्वर्ग सँ गाछ लाओल ।

कमल-नयन हरि ओ ओ रे देखल
[कोटि हृदय-सुख लेखल] ।

शीवदत्त कवि ओ ओ रे पद भन
[79]मनमथ उपगत भेल तन ॥२४॥

अपि च—

भेल सखि ! परम सुदिन दिन आजे । देखल पारिजात तरुराजे ॥
शीक कलपतरु हुनके नाम । सोरित मनक परिपूरल काम ॥
... ... । ... ... ॥
... ... । ... ... ॥२५॥

(अथ जयन्त-प्रवेश-गीतम्—)

रथ चढ़ि आएल कुमर जयन्ते[80] । कृष्ण-तनय [81]मनमथ बलवन्ते ॥
भारी युद्ध पड़ल ओहि ठामे । देखि देखि हरषित वासव-श्यामे[82] ॥
दुहु बल देय बरोबरि देल । ककरो सँ भङ्ग समर नहि भेल ॥
भाइ भाइ रण भेल भयान । लड़ए ऐरावत गरुड़ निदान ॥
[83]वासव सँ यदि भिड़ए गोपाल । डोलए महि काँपए दिगपाल ॥
शीवदत्त भन सुमरि भवानि । हमर मनोरथ पूरह आनि ॥२६॥

(अथ इन्द्र-कृष्ण-संग्राम-गीतम्—)

[84]ऐरावत-पिठ सुरपति सजनि गे खगपति-पिठ रुकुमिनि-पति ।
पाथर वज्र अस्त्र कर सजनि गे संग शोभय नव जलधार ।
अस्त्र गदा कर श्यामक सजनि गे निरखल अति अभिमान ।
शिवदत्त एहो पद भान सजनि गे रसमय पेँ रस जान ॥२७॥

७९—कामदेव उपस्थित भेल ।
८०—इन्द्रक पुत्र जयन्त । ८१—कृष्णक पुत्र कामदेव । ८२—इन्द्र ओ कृष्ण । ८३—इन्द्र सँ । ८४—एहि गीतक पाठ इतस्ततः भए गेल अछि ।

(अथ तयोः संग्राम-गीतम्-)

साजि आएल दल [गर्वित] सुरपति, संग पयोधर[85] जाल ।
कए मन कोप चलल हरि यावत, काँपए दस दिगपाल ॥
सुरपति उर हेरि हरि मन भाओल, अस्त्र गदा कर साज ।
कोप भरिय भरि चलल पुरन्दर[86], दुन्दुभि[87] दुहु दिशि बाज ॥
मदन-मुरारि विचारि समारल, फेकल मन अनुमानि ।
जाय गदा उर लागल सुरपति, [सभकाँ] मारल हानि ॥
पारिजात एक गाछ उपाड़ल, अपनहि फुलवन लाए ।
जहि कारण धनि रूसलि छलिहे, से देल द्वार लगाए ॥
परसनि [भए] करि [हेरु] आबे धनि, आब उचित नहि मान ।
पारिजात तरु द्वार निहारिअ, न करिअ हृदय पषान[88] ॥
अवगुन परिहरि हरषि निहारल, तेजल मानिनि मान ।
हरिपद कमल हृदय धरि राखल, शीवदत्त पद भान ॥२८॥

(अथ मानभङ्ग-गीतम्--)

[89]बिमुखि ! सुमुखि भए, सदय हृदय कय, बाँकि नयन हरि हेरि ।
कीदहु रङ्कु[90] परसमनि पाओल, बिहुँसि हँसलि मुख मोरि ॥
आए अधर पर छुटल चिकुर[91] लट, मनमथ[92] हरि मन जाग ।
नागरि एहन सन जनि शशि[93] ऊपर, पिवए अमिअ-रस [94]नाग ॥
मानवती संग रसिक शिरोमणि, कएल अधर मधुपान ।
मन अवधारि जानि गुनगौरव, करिअ आलिङ्गन दान ॥
कनक-लता सनि नागरि निरखति, [निरखत] नन्दकुमार ।
शीवदत्त कवि गाओल [मन दए], पसरल प्रेम पसार ॥२९॥

इति श्रीशिवदत्तकृतं पारिजात-नाटकं
समाप्तम् ॥

८५—मेघक समूह । ८६—इन्द्र । ८७—रणवाद्य । ८८—पाथर ।
८९—बिगड़लि सँ प्रसन्ना भए । ९०—दरिद्र जेना स्पर्शमणि पबि गेल हो ।
९१—केश । ९२—कामदेव । ९३—चन्द्ररूपी नायिकाक मुँह पर ।
९४—नागरूपी कृष्ण अमृत पी रहि ॥

★